



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 164]

नई चिल्ली, शनिवार, सितम्बर 11, 1982/भाद्र 20, 1904

No. 164] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 11, 1982/BHADRA 20, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संलग्न वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई चिल्ली, 11 सितम्बर, 1982

निधन सूचना

सं. 3/6/82—पत्रिका—शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के निधन से देश ने
आपने महात्मा मधुपती में से एक मधुपति खो दिया है। धर्म निषेधाता के प्रतीक,
लोकतंत्री नेता, लघु प्रतिष्ठित स्वतन्त्रता सेनानी और निष्ठावान
समाजवाची शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जम्मू और कश्मीर की राजनीति पर
अधिकारी से अधिक समय तक छाये रहे।

2. आपका जन्म 5 दिसम्बर, 1905 को श्रीनगर के एक उपनगर भौरा
में एक शाल व्यापारी के परिवार में हुआ। आपके पिताजी का मृत्यु आपके
जन्म से कुछ समय पहले ही गई थी और माना जी की मृत्यु आपके बाल्य-
काल में ही ही गई। गवर्नरेंट हाई स्कूल श्रीनगर से मैट्रिक ऑफरेंस का पास
करने के बाद आपने इस्लामिया कालेज लाहौर से बैचलर आफ साइंस की
डिप्लोमा प्राप्त की और अलंगढ़ मुस्लिम थूनिविंसिटी से रसायन शास्त्र में
मास्टर आफ साइंस की डिप्लोमा अर्जित की। 1930 में कश्मीर कांग्रेस
पर आपने एक स्कूल अध्यापक के रूप में अपना करियर आरम्भ किया
परन्तु कुछ महीने बाद ही आपने स्ट्राई। संग्राम में गांधी लेने के लिए
नोकरी छोड़ दी।

3. राजनीतिक क्षेत्र में वर्दीण करते ही आप महात्मा गांधी, जवाहरलाल
नेहरू और मीलानी अबुल कलाम आजांव से बहुत प्रभावित हुए। आपने
जम्मू और कश्मीर मुस्लिम कानूनों को, जिसके आप 1932 में
मध्यस्थ बने थे एक धर्म निरपेक्ष मंस्त्रा में बदल दिया और इसका नाम नेशनल
कानून रखा। इस प्रकार आपने सभी धर्मों के व्यक्तियों को स्वतन्त्रता
आन्दोलन में भाग लेने का प्रशस्त विवाद किया।

4. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला का विश्वास या कि हमारे देश की विविध
धर्मों और बहुभाषा वाली परम्परा प्रत्येक क्षेत्र को इस बात का पूरा-पूरा
ध्रुवसर प्रदान करती है कि वह आपने विशिष्ट सास्कृतिक अक्षितत्व के माध्यम
से सारे देश के अक्षितत्व के निर्माण में योगदान दे सके। आपके विचार में
धर्म की राज्य का आधार नहीं बनाया जा सकता। आपने श्री मोहम्मद
अली जिला द्वारा प्रतिपादित डिग्री मिडिल का डॉक्यो देश से विरोध किया।
आप निष्ठावान लोकतंत्री नेता भी थे और सामन्वय के कठूर विरोधी थे।
महात्मा गांधी द्वारा भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के लिए किये गए आहवान
का अनुसरण करते हुए महाराजा के शासन करने के अधिकार की अतीतेना
करते हुए और यह घोषणा करते हुए कि "प्रभुसत्ता पर जनता का अधिकार है" आपने 1946 में कश्मीर छोड़ा। आन्दोलन आरम्भ किया
इसके लिए आप पर राजदौर का मुकदमा चलाया गया और आपको कद
की सजा दी गई।

5. 1947 में, जब पाकिस्तान ने कश्मीर घाटी पर आक्रमण किया,
उस समय आपने विवरणी आक्रमण के विरुद्ध लोगों को न केवल मातृभूमि की

रक्षा के लिए प्रेरित किया बल्कि भारत में विलय के लिए उनका समर्थन भी तैयार किया। आप राज्य की सापातकालीन सरकार के अध्यक्ष बने।

6. राज्य सरकार की बागडोर सम्पादने के बाव आपने एक जबरदस्त सुधार कार्यक्रम आरंभ किया। जमीदारी समाप्त की गई। लोगों को शृंग राहन की गई। राज्य के लोगों की मनाई के लिए विभिन्न क्षेत्रों में योजनाएँ और कार्यक्रम शुरू किए गए।

7. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला भारतीय संविधान सभा के सदस्य थे और संविधान पर आपके हस्ताक्षर मौजूद हैं। आप 1948-49 में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में गए और आपने यह विचार अपनाया कि कश्मीर में पाकिस्तान की कोई वैध स्थिति नहीं है क्योंकि कश्मीर का पहले ही भारत में विलय हो चुका है।

8. आपके उत्कृष्ट जीवन में एक नया अध्याय उस समय शुरू हुआ जब आपने फरवरी, 1975 में जम्मू और कश्मीर सरकार का नेतृत्व सम्भाला और आपने आखिरी दम तक आपने राज्य प्रशासन का नियंता और साहस के साथ मानवदर्शन किया। आपकी संरक्षकता में राज्य ने विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी प्रगति की।

9. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जीवन भर एकता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा लोकतंत्र के आदर्शों का सम्मान करते रहे और इनकी वृद्धतापूर्वक विकासत करते रहे। आप जीवनभर फिरकापरस्ती थे, प्रान्तीयों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और आपने अपनी सारी शक्तियाँ गरीबों को उठाने तथा देश की एकता को भजदूत बनाने में लगाई। आपने राज्य के लिए वे पिता-तुल्य थे और मोर-ए-कश्मीर नाम से लोकप्रिय थे। शेख अब्दुल्ला महान देशभक्त थे। आपके निधन से देश ने भ्रमाधारण कोटि और उत्तरियों वाला एक राजनेता भीर स्वतन्त्रता सेनानी खो दिया है। भारत की जनता तथा भारत सरकार को आपकी मृत्यु से गहरा सदमा पहुंचा है।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th September, 1982

OBITUARY

No. 3/6/82-Public—In the death of Sheikh Mohammed Abdullah, the country has lost one of its great sons. An embodiment of secularism, a democrat, a veteran freedom fighter and a staunch socialist, Sheikh Mohammed Abdullah dominated the political scene of the Jammu & Kashmir State for more than half a century.

2. He was born on December 5, 1905, at Soura, a suburb of Srinagar, in a shawl merchant's family. His father had died shortly before his birth and he lost his mother in childhood. After his Matriculation from the Government High School at Srinagar, he took his Bachelor's Degree from Islamia College, Lahore, and Master's Degree in Chemistry from Aligarh Muslim University. On returning to Kashmir in 1930, he started his career as a school teacher but threw up his job a few months later to join national struggle for freedom.

3. As he entered the political arena, he was greatly influenced by Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, and Maulana Abul Kalam Azad. He converted the J and K Muslim Conference, of which he became the President in 1932, into a secular forum and named it National Conference, thus affording equal opportunities to persons belonging to all faiths to participate in the freedom movement.

4. Sheikh Mohammed Abdullah believed that our country's multi-religious, multi-lingual heritage gave full opportunity for each region, with its distinctive cultural personality to contribute to the personality of the whole country. Religion, in his view, could not become the basis of the State. He firmly opposed the two-nation theory propounded by Shri Mohammed Ali Jinnah. He was also a staunch democrat, and was an articulate fighter against feudalism. Following the lead given by Mahatma Gandhi in the struggle for India's freedom, he launched the 'Quit Kashmir' movement in 1946 denouncing Maharaja's right to rule and declaring that "sovereignty belongs to the people". For this, he was tried for sedition and imprisoned.

5. In 1947, when Pakistan invaded the Kashmir Valley, he mobilised the people not only for the defence of the homeland against foreign aggression but also their support for accession to India. He became the Head of the State's Emergency Government.

6. After taking over the reins of the State Government, he launched a massive reform programme. Zamindari was abolished. The people were given debt relief. Schemes and programmes for the good of the people of the State in various fields were initiated.

7. Sheikh Abdullah was a Member of the Indian Constituent Assembly and was a signatory to the Constitution. He visited the United Nations as a Member of the Indian delegation in 1948-49 and held the view that Pakistan had no legal position in Kashmir because Kashmir had already acceded to India.

8. A new chapter in his distinguished life of service began when he resumed leadership of the Government in Jammu & Kashmir in February 1975 and up to his last day, he guided the administration of the State with dedication and drive. During his stewardship, the State made good progress in various fields.

9. Sheikh Mohammed Abdullah cherished and firmly advocated, throughout his career, the ideals of unity, secularism, socialism and democracy. He fought all his life against sectarian interests and parochialism, and devoted all his energies to the uplift of the poor and the strengthening of the unity of the country. For his State he was a father figure and was popularly called the Lion of Kashmir. Sheikh Abdullah was a great patriot. In him, the country has lost a statesman and freedom fighter of remarkable stature and achievement. The people and the Government of India mourn his death with profound grief.

T. N. CHATURVEDI, Secy.